

**वित्तवान** वि. (तत्.) जिसके पास वित्त हो, धनवान, धनी।

**वित्तविधेयक** पुं (तत्.) प्रशा. लोकसभा या विधानसभा में प्रस्तुत किया जाने वाला विधेयक जिसके द्वारा बजट प्रस्तावों को कार्यान्वित किया जा सके।

**वित्तसाधन** पुं (तत्.) 1. वे सभी स्रोत जिससे सरकार, राज्य, संस्थाएं आदि अपने वित्तीय साधन प्राप्त करते हैं 2. आय के साधन।

**वित्तहीन** वि. (तत्.) जो धन से हीन हो, निर्धन, गरीब।

**वित्ताभाव** पुं. (तत्.) वित्त का अभाव, वित्त की कमी, धन की कमी।

**वित्तीय** वि. (तत्.) 1. वित्त संबंधी, आर्थिक 2. जो वित्त की व्यवस्था के अनुसार वित्तीय वर्ष हो।

**वित्तीय वर्ष** पुं. (तत्.) वित्त की व्यवस्था के अनुसार चलने वाला सरकार का निर्धारित एक वर्ष।

**वित्तेश/वित्तेश्वर** पुं. (तत्.) धन का स्वामी एक देवता, कुबेर।

**वित्तोषक** पुं. (तत्.) किसी व्यवसाय में लाभ की दृष्टि से पूँजी लगाने वाला दे. वित्तकार।

**वित्थार** पुं. (तद्.) 1. विस्तार, फैलाव।

**वित्रप** वि. (तत्.) जो लज्जा रहित हो, बेलज्ज, बेशर्म।

**वित्त्व** पुं (तत्.) जानकार, वेत्ता होने की अवस्था, भाव, वेत्तापन।

**विथकना** अ.क्रि. (तत्.+देश.) 1. थक जाना, शिथिल पड़ना 2. विमोहित या चकित हो जाने पर कुछ बोल न सकना।

**विथकित** वि. (देश.) 1. थका हुआ, शिथिल 2. मुग्ध या चकित होने की अवस्था में जो कुछ बोलने में असमर्थ हो, स्तब्ध।

**विथराना** स.क्रि. (तत्.) किसी वस्तु को इधर-उधर छितराना, फैलाना।

**विथा** स्त्री. (तद्.) 1. मानसिक या शारीरिक कष्ट, रोग 2. व्यथा, पीड़ा, कष्ट, वेदना।

**विथारना** स.क्रि. (तत्.) किसी चीज को जमीन पर फैलाना, तितर बितर करना, छितराना।

**विथित** वि. (देश.) व्यथित, पीड़ित, दुखी।

**विथोई** पुं. (देश.) 1. जिसका प्रिय व्यक्ति उससे बिछुड़ गया हो 2. जो अपने प्रिय के वियोग से दुःखी हो, वियोगी।

**विदंक** पुं. (तत्.) 1. प्राप्त करने वाला 2. जानने वाला, वेत्ता।

**विदग्ध** वि. (तत्.) 1. आग से जला हुआ 2. जो जलकर नष्ट हो गया हो 3. जठराग्नि से पका हुआ, पचा हुआ 4. निपुण 5. विद्वान्, पंडित 6. रसिक, रसज्ञ 7. सुंदर 8. जो जला या पचा न हो। पुं. 1. चतुर या धूर्त व्यक्ति 2. एक प्रकार की घास।

**विदग्धता** स्त्री. (तत्.) 1. विदग्ध होने की अवस्था या भाव 2. पांडित्य, विद्वत्ता 3. निपुणता, कुशलता 4. रसिकता 5. चतुरता।

**विदग्धा** स्त्री. (तत्.) काव्य. वह नायिका जो चतुरता से परपुरुष को अपनी ओर आसक्त कर ले।

**विदर** पुं. (तत्.) 1. फाड़ना, विदारण करना 2. दरार, चीर 3. कंकारी वृक्ष चिकि. एक रोग, पीड़ादायी फटन या दरार भूवि. शैलों या शिलाओं में पड़ी दरार जिससे वे अलग-अलग खंड हो जाते हैं।

**विदरना** अ.क्रि. (तत्.) किसी चीज का विदीर्ण हो जाना, फटना स.क्रि. 1. फाड़ना, विदीर्ण करना 2. पीड़ित करना 3. कष्ट देना।

**विदर्भ** पुं. (तत्.) 1. एक राजा 2. एक ऋषि 3. आधुनिक बरार 4. मसूड़े का एक रोग, दाँत हिलना।